नाम- डॉ. प्रदीप कुमार राय
एसो. प्रोफेसर, रोहतास महिला कॉलेज, सासाराम।
विषय- राजनीतिशास्त्र
कक्षा- बी.ए. (प्रतिष्ठा) पार्ट-03

दिनांक- 27.05.20

टॉपिक- उदारवादी राष्ट्रवादियों (कांग्रेस) की विचारधारा और कार्यपद्धति—

अपने प्रारंभिक वर्षों में कांग्रेस उदार राष्ट्रवादियों की भावनाओं, क्रियाकलापों एवं विचारों से प्रभावित थी। इस दौर (1885-1905) में उसके मूल विचारों का अध्ययन निम्न रूपों में किया जा सकता है—

(1.) ब्रिटिश सम्राट के प्रति राजभक्ति— प्रारंभिक काल में कांग्रेस के संचालन कर्ता अपने परिवेश, पृष्ठभूमि, शिक्षा-दीक्षा आदि से उदार राष्ट्रवादी विचार धारा से प्रभावित थे। ये ब्रिटिश शासक के कार्यों से कृतज्ञ थे और उनके प्रशंसक भी थे। कांग्रेस के प्रथम एवं द्वितीय अधिवेशन में भी उनके इस विचार एवं भाव का प्रगटीकरण होता है। सरकार भी इनकी इस भावनाओं एवं विचारों से प्रभावित होकर इन्हें सम्मानित विभिन्न पदों एवं पदवी से की जिसके पीछे इनकी प्रतिभा और योग्यता भी थी।

(2.) अंग्रेजों की न्यायप्रियता में विश्वास- उदार राष्ट्रवादी अंग्रेजों की न्यायप्रियता के कायल थे। उनका यह विश्वास था कि यदि अंग्रेजों को भारतीय दृष्टिकोण, उनकी आवश्यकतायें, मांगों, विचारों से परिचित कराया जाये तो वे भारतीय हितों के प्रति अपनी न्यायप्रियता का परिचय देंगे। एस.एन. बनर्जी, फीरोजशाह मेहता, आदि ने इस विचार की अभिव्यक्ति की। ब्रिटिश शासन व्यवस्था द्वारा विकास

Scanned with CamScanner

है जो विभिन्न क्षेत्रों में काम किये गये उससे भी प्रभावित होकर वे ब्रिटिश शासन की व्यवस्था बनाये रखने के पक्षधर थे। गोपाल कृष्ण गोखले के शब्दों, कतिपय कमियों के बावजूद ब्रिटिश शासन देशवासियों की प्रगति का साधन रहा है और इसके जारी रखने का अर्थ उस शांति एवं व्यवस्था के जारी रहने से है...जिनके साथ हमारे लोगों के हित बंधे हैं।

(3.) क्रमिक सुधार में विश्वास — राजनीतिक क्षेत्र में उदारवादी क्रमिक सुधार चाहते थे। वे शासन में क्रमिक और तात्कालिक सुधार प्राप्त कर प्रतिनिधियात्मक शासन के लक्ष्य को प्राप्त करना चाहते थे। इसीलिये दादा भाई नैरोजी के द्वारा स्वशासन की मांग की गई थी। एस० एन० बनर्जी के शब्दों में, भारतीयों की तात्कालिक रूप में केवल यह आकांक्षा है कि सरकार के आधार को अधिक विस्तृत किया जाये और जनता का उसमें समुचित भाग हो।

(4.) राजनीतिक स्वशासन का लक्ष्य — उदारवादियों द्वारा जिस क्रमिक सुधार की अपेक्षा की गई थी वह अंतत: भारतीयों के लिये स्वशासन का अंतिम लक्ष्य था। उनके अनुसार ब्रिटिश शासन के अंतर्गत भारतीयों को स्वशासन का पर्याप्त प्रशिक्षण प्राप्त हो चुका था और भारत स्वशासन के लिये पूर्णतया तैयार था। एस० एन० बनर्जी का विचार था कि, 'प्रत्येक राष्ट्र को स्वयं ही अपने भाग्य का निर्णय करना चाहिये। यही प्रकृति का नियम है।'

(5.) उदारवादियों की कार्य पद्धति — संवैधानिक साधनों में विश्वास — उदारवादियों का विश्वास संवैधानिक साधनों के प्रयोग में था। वे अहिंसक प्रयासों द्वारा अपनी मांगों को प्राप्त करना चाहते थे, यथा — प्रार्थना पत्र, स्मृति पत्र, प्रतिनिधि मंडल द्वारा आदि जिसे आलोचकों ने राजनीतिक भिक्षावृत्ति का नाम दिया।

इस प्रकार उन सबके परिणाम स्वरूप भारतीयों में चेतना जागृति एवं सक्रियता का विकास हुआ जिसका श्रेय उदारवादियों को जाता है।